Sangeet Manthan: Article 4 of N: December, 2012

By Dr. Sudha Patwardhan

Send comments and questions to: reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

राग वर्गीकरण

राग वर्गीकरण के विषय में हमने पिछले लेख में देखा कि कितने प्रकारों से राग वर्गीकरण किया जाता है| संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि १ स्वर- संख्या के आधार पर और राग स्वरूप के आधार पर वर्गीकरण आज कि तारीख में अधिक प्रचलित हैं| पुराना ६ राग और ३६ रागिनी वाला वर्गीकरण अब प्रचलित नहीं है तथा शुद्ध, छायालग और सम्पूर्ण -- इस प्रकार का वर्गीकरण लोकप्रिय नहीं है| अत: सम्पूर्ण, षाडव व औडव यह स्वर संख्या के आधार पर किया गया वर्गीकरण तथा राग स्वरूप के आधार पर किया गया वर्गीकरण ये दोनों वर्गीकरण ही अधिकतर प्रयुक्त होते हैं|समय चक्र के आधार पर किए गए वर्गीकरण में प्रात: कालीन एवं संध्या कालीन संधिप्रकाश रागों का एक गुट बनाया गया है और यही सर्वाधिक प्रभाव डालनेवाला गुट है| यह गुट सवेरे के ४ से ७ तथा दोपहर के ४ से संध्या के ७ बजे तक के समय में गाये बजाये जाने वाले रागों का गुट है| जैसा कि पहले बताया जा चुका है इस गुट के रागों में रिषभ अनिवार्य रूप से कोमल होता है| गंधार शुद्ध होता है|इस वर्ग के रागों की इस विशेषता में ही इस गुट की सामर्थ्य निहित है|प्रात:कालीन संधि प्रकाश रागों में गंभीर भाव और भक्ति के भाव की प्रधानता होती है जब कि सायंकालीन संधिप्रकाश रागों में करूण, उदासी की भावना और वैराग्य भावना की अधिकता होती है| मानव मन में इन्ही भावनाओं को अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है| इसी कारण अन्य प्रहरों के रागों को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता|यद्यपि गायन सभी रागों का होता है| संधिप्रकाश रागों में सभी लोकप्रिय हैं ,तथापि प्रात:कालीन रागों में भैरव और भैरव के प्रकार जैसे कि अहीर भैरव ,नट भैरव ,बैरागी भैरव अधिक प्रचार में हैं|भैरव राग के बारे में सभी जानते हैं की इसमें रिषभ और धैवत दोनों कोमल लगते हैं| ये दोनों स्वर आंदोलित रहते हैं और ऋषभ में गांधार का या मध्यम का कण लगाकर ही भैतव को गया जाता है| इस कारण राग का प्रभाव पर्याप्त रूप से गंभीर बना रहता है| इस राग में संस्कृत भाषा में राग-ध्यान अर्थात भैरव राग के अधिष्ठाता भगवान शिवशंकर की स्तुति में श्लोक रचना की गई है और ऐसे श्लोक प्राय: गाए जाते हैं| यह प्राचीन राग है और राग-रागिनि व्यवस्था में इसे पुरुष राग माना गया था|इसकी प्रकृति शांत व गंभीर प्रतीत होती है| इस राग में अक्सर मंदिरों में ध्रुपद गायन हुआ करता है| सभी घरानों में प्राय:सवेरे भैरव राग रटाया जाता है| भैरव के अनेक प्रकार हैं, जिनमें आजकल अहीर भैरव,नट भैरव और बैरागी भैरव विशेष प्रचलित हैं| अहीर भैरव राग में निषाद कोमल होता है, रिषभ कोमल है ही, जो कि प्रात:कालीन संधिप्रकाश रागों की विशेषता है| कहा जाता है कि यह राग अहीर अर्थात ग्वाले इत्यादि ग्रामीण जातियों की धुन पर आधारित है| धुन को शास्त्रीय संगीत में परिवर्तित करते समय कुछ विस्तारित करके अभिजात संगीत के योग्य राग-रूप बनाया गया है| आज कल यह राग बहुत लोकप्रिय है और कई गायक-वादक इसे महफ़िलों में गाते-बजाते हैं| ऐसा ही दूसरा लोकप्रिय राग है नट भैरव|प्रात:कालीन संधि प्रकाश राग होते हुए भी इसमें रिषभ शुद्ध है|

कलाएं वास्तव में प्रयोगजीवी होने से उन्हें पूरी तरह शास्त्र में बाँधना संभव नहीं हो पाता|यथा शक्ति नियम बनाए जाते हैं,किन्तु अपवाद भी हुआ करते हैं;जैसा कि नट भैरव में शुद्ध रिषभ अपवादस्वरूप आता है| शुद्ध रिषभ के होते हुए भी यह राग बहुत लोकप्रिय है| धैवत कोमल है जिससे भैरव का वातावरण बनने में सहायता मिलती है| नट एवं भैरव का मिश्रण इस राग में होने से -रेग,गम इस नट के अंग का प्रयोग करते समय रिषभ शुद्ध रहना उचित ही लगता है,धैवत को भैरव के धैवत के समान आंदोलित रखने से प्रात:कालीन राग की अवतारणा सफलतापूर्वक हो जाती है| राग बैरागी भैरव में गांधार तथा निषाद ये दोनों स्वर वर्जित हैं| अत: राग की जाती औडव है| रिषभ कोमल है, किन्तु निषाद कोमल है,जबकि प्रात:कालीन संधिप्रकाश रागों में निषाद शुद्ध होता है| यहाँ भी नट भैरव के सामान अपवादात्मक स्थिति दीख पड़ती है| किन्तु फिर भी राग की रंजकता में कोई कमी नहीं है| अपितु रिषभ एवं निषाद के कोमल होने से राग पर्याप्त रूपसे करुण तथा गंभीर भाव का निर्माण करता है| केवल पांच स्वरों के होते हुए भी राग में कोई अधूरापन नहीं प्रतीत होता| यही हमारे राग संगीत की एक प्रकार से विशेषता है कि चाहे सम्पूर्ण जाती के भैरव,अहीर भैरव और नट भैरव जैसे राग हों अथवा बैरागी भैरव जैसे औडव जाती के राग हों ,राग की प्रस्तुति में सम्पूर्ण संतोष की प्रतीति होती है|अगले भाग में कुछ और भैरव प्रकारों पर विचार होगा|

English Translation

Classification of Raagas

In the previous article, we covered various types of Raaga classification. In short, all ragas are classified according to 1) the number of swaras included in that raga and 2) Form of the raag (Raag swaroop)

In ancient times, there was a classification of 6 raagas and 36 raaginis which does not exist any more. Also, Classification as ‘Shuddha, Chhayalag, Sankeerna raagas’ is not very commonly used. Therefore, ‘Sampoorna, Shaadav, Audav’ is the classification based on the number of swaras. Another popular classification is on the form of the raag (Raag Swaroop) as mentioned above. In the classification according to ‘Raag Samay’ (timing of the raga), there exists a group of ‘Sandhiprakash Raagas’ (Raagas sung during the twilight) including both ‘Pratakalin’ (early morning) and ‘Sayankalin’ (early evening) which is most effective. This group is formed by the ragas sung at the time between 4-7 (am or pm). As it is previously mentioned, ragas of this group inevitably contain ‘Komal Re’. Gandhar is Shuddha. This specialty is the strength of this group of ragas. In Pratakalin Sandhiprakash ragas, there is more serious (gambhir) and devotional feeling. On the other way, in ‘Sayankalin Sandhiprakash’ ragas, there is mostly a depressed feeling (Karunya bhaav and Vairagya bhaav). In human mind, these are the superior emotions. (These emotions are on top priority). For this reason, not much importance is given to the ragas those are sung in other times (Prahar) of the day. All ragas are sung though. In Sandhiprakash ragas, all

ragas are popular, but in Pratakalin ragas, Raag Bhairav and its types like 'Ahir-Bhairav', 'Nat Bhairav', 'Bairagi Bhairav' are appreciated by people. It is commonly known that Raag Bhairav has 'Rishabh' and 'Dhaivat' both komal. Both these swars are andolit i.e. sung with 'Kan swar' of 'Gandhar' or 'Madhyam' in 'Rishabh' which creates the serious effect ('Gambhir swaroop') of that raag. In Sanskrit Raag-Dhyaan, means the compositions (cloaks) are in the praise of Lord Shiva for whom 'Raag Bhairav is commonly sung. This is an ancient raag and in the system of 'Raag-Raagini', this was considered as 'Purush' (original) raag. The nature of this raag is quiet and serious. In this raag, singing 'Dhrupad' in temple is done quite often. In all the gharanas, mostly 'Raag Bhairav' is put into practice in the morning. There are many types of 'Raag Bhairav', from which now-a-days, 'Ahir-Bhairav', 'Nat-Bhairav', 'Bairagi Bhairav' are most popular. In 'Raag Ahir-Bhairav', 'Ni' is 'komal' where 'Re' is already 'komal' which is the peculiar feature of 'Pratakalin Sandhiprakash' ragas. It is said that this raag is based on the dhuns of rural tribes such as 'Ahir' means 'Gwale' etc. While transforming 'dhun' into classical music, with some development, made suitable to **traditional** music ('Abhijat Sangeet'). Today, this raag is very popular and many musicians perform this raag in the concerts. Another such popular raag is 'Nat Bhairav'. In spite of being 'Pratakalin Sandhiprakash' raag, it has 'Rishabh' Shuddha.

An art is really born from various experiments, so it cannot be bound completely by scientific rules. Rules are designed as per norms, but there are always exceptions for such rules. e.g. Shuddha Re in Nat Bhairav. In spite of being Shuddha Re in the raag, 'Nat Bhairav' is very popular. 'Dha' is komal which helps in creating the atmosphere of Bhairav. As there is a mixture of 'Nat' and 'Bhairav' in this raag, Shuddha Re sounds appropriate while experimenting ReGa, **GaMa ang of 'Nat'**, also 'Dha' having andolan like 'Dha' in 'Bhairav' successfully creates the surrounding effect of 'Pratakalin' Raag. In Raag 'Bairaagi Bhairav', 'Ga' and 'Ni' both swaras do not exist (varjit). Therefore, Jaati of the raag is 'Audav'. Rishabh is komal, but Nishad is also komal which is supposed to be 'Shuddha' in **'Pratahkalin** Sandhiprakash' raagas. This also is an exceptional case like 'Nat Bhairav'. But still the melody of the raag is not affected. However, as Rishabh and Nishad are komal, final effect of the raag creates depressed and serious kind of feeling. Though there are only 5 swaras in this raag, it does not sound incomplete. This is the specialty of our Raag Sangeet that there is a feeling of fulfillment in the performance whether the raag is 'Sampoorna' jaati raag such as 'Bhairav', 'Ahir Bhairav','Nat Bhairav' or it is 'Audav' jaati raag like 'Bairagi Bhairav'. In the next article, we will consider some more types of 'Bhairav'.